अमर उजाला
राजधानी
वर्ष 10 | अंक 312 | पृष्ठ : 20+8=28
मूल्य : तीन रुपये
7 राज्य • 1 केंद्रशासित प्रदेश • 19 संस्करण
लखनऊ
शनिवार, 12 मई 2018
उत्तर प्रदेश
amarujala.com

स्पोर्ट्स

लगातार 50 सेट जीतकर राफेल नदाल ने तोड़ा जॉन मैकेनरो का रिकॉर्ड...17

लखनऊ की सरजमीं...
यहां दिलों में प्यार है
जिधर नजर उठाइये
बहार ही बहार है
कली-कली है नाजनीं
ये लखनऊ की सरजमीं
- शकील बदायुनी

...यूं बदली अवध के सुल्तानों के महल की सूरत

1847

की 12 फरवरी को अवध के आखिरी शासक वाजिद अली शाह की ताजपोशी लाल बारादरी में हुई। इससे पहले अवध के नवाबों नसीरुद्दीन और गाजीउद्दीन हैदर की ताजपोशी भी इसी भवन में हुई। इसे कस्र-उल-सुल्तान अर्थात सुल्तानों का महल कहा जाता है। नवाबों के इतिहास की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण इस भवन का निर्माण अवध के नवाब सआदत अली खान ने अपने दरबार के रूप में कराया था।

लाल बारादरी
तब

कुछ वर्षों पूर्व गुलिस्तान-ए-इरम और दर्शन विलास के जीर्णोद्धार के दौरान लाल बारादरी के संरक्षण का कार्य भी किया गया। संरक्षण कार्य से इस भवन की सूरत ही बदल गई है। कार्य अब अंतिम चरण में है। इस भवन में पिछले कई वर्षों से संस्कृति विभाग के अधीन कार्य करने वाली राज्य ललित कला अकादमी का कार्यालय है।

अब

इनोवेशन फॉर लाइफ

पैडल नहीं, सौर ऊर्जा से चलेगी साइकिल

आप अभी तक पैडल की मदद से साइकिल चलाते आ रहे हैं, लेकिन अब इसे सौर ऊर्जा से भी चलाया जा सकेगा। ये कारनामा किया है स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज कॉलेज (एसएमएस) के निदेशक डॉ. भरत राज सिंह और फैकल्टी अर्पिता अस्थाना की मदद से छात्र अनूप सिंह, मो. तालिब, शशांक मौर्या, शिवम तिवारी और शिवेंद्र शुक्ला ने। इसका फायदा यह हुआ कि जहां साइकिल की गति 10 किमी. प्रतिघंटा से बढ़कर 25 किमी. प्रतिघंटा तक हो गई, वहीं पैडल मारने के झंझट से भी छुटकारा मिल गया। ग्रामीण और शहरी इलाकों को ध्यान में रखते हुए यह साइकिल तैयार की गई है। आम साइकिल को सोलर में बदलने के लिए करीब आठ हजार रुपए का खर्च आता है। इसके बाद यह पर्यावरण और जेब के लिए किफायती विकल्प बन जाता है।

आइए, लाल पुल से करें पुराने शहर का दीदार

चौक की हेरिटेज वॉक...

लखनऊ की धरोहरें दिखने में जितनी खूबसूरत हैं उतनी ही दिलचस्प उनसे जुड़े किस्से-कहानियां हैं...। कुछ इमारतें तो ऐसी कि जिनके किस्से पूरे भारत में मशहूर हैं। लाल पुल, इमामबाड़ा, भूलभुलैया, शाही बावली, घंटाघर, सतखंडा, शीश महल... ऐसी ही तमाम इमारतें हैं, जो पुराने शहर के गुजरे कल से रूबरू कराती हैं। चौक की हेरिटेज वॉक में पुराने शहर के नवाबी वैभव का दीदार कहानी-किस्सों के साथ ही होता है। लोग गाइड के साथ जब शाही बावली के किस्से जानते हैं तो इमामबाड़े के बनने की कहानी के साथ ही हर इमारत के रोमांचित करने वाले इतिहास से भी रूबरू होते हैं।

यादों से जुड़ जाती है वॉक

सालों से हेरिटेज वॉक से जुड़े टूरिस्ट गाइड नवेद जिया के मुताबिक हेरिटेज वॉक का मकसद लोगों को उनको बीते हुए कल का दीदार कराना है। चौक की हेरिटेज वॉक में शामिल होने वाले लोगों को लखनवी जायके से भी रूबरू कराया जाता है। यहां भारतीय और विदेशी पर्यटकों की अलग-अलग टिकट कैटेगरी है।

मार्ग - एक

- लाल पुल से शुरुआत
- शाहपीर का मकबरा
- टीले वाली मस्जिद
- नौबतखाना
- आसिफी इमामबाड़ा
- इमामबाड़ा पार्क
- बड़ा इमामबाड़ा
- शाही बावली
- आसिफी मस्जिद ◆ भूलभुलैया ◆ मुसाफिरखाना
- रूमी गेट
- कुड़ियाघाट
- शीशमहल
- पिक्चर गैलरी
- घंटाघर ◆ सतखंडा
- हुसैनाबाद गेटवे
- छोटा इमामबाड़ा
- जीनत आलिया का मकबरा
- मस्जिद मो. अली शाह
- जामा मस्जिद पर समाप्ति...।

लाल पुल

बड़ा इमामबाड़ा

रूमी गेट

सतखंडा

छोटा इमामबाड़ा

मार्ग - दो

मार्ग एक पर चलते हुए रूमी गेट से चौक की ओर दूसरा मार्ग

- गोल दरवाजा
- चौक कोतवाली
- किंग यूनानी हॉस्पिटल
- कप्तान का कुआं
- फरंगी महल
- नेवाली हवेली
- ऐनक वाली मस्जिद
- मीर अनीस की मजार
- मीर अनीस की हवेली
- तहसीन की मस्जिद
- अकबरी गेट
- अहमद मंजिल पर समाप्ति...।

कुड़ियाघाट

गोल दरवाजा

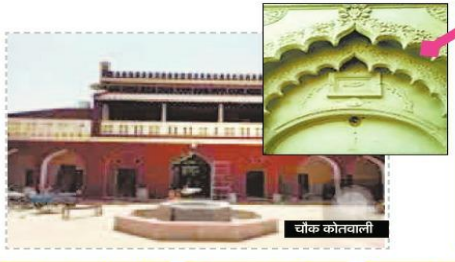

चौक कोतवाली